उन हाथों से परिचित हूँ मैं

शलभ श्रीराम सिंह



रामकृष्ण प्रकाशन, विदिशा (म प्र)

उन हाथों से परिचित हूँ मैं

शलभ श्रीराम सिंह की कविताओं का संकलन

प्रथम संस्करण फरवरी 1993

सर्वाधिकार कु. [illegible] सिंह

आवरण कु. श्वेता एवम् कु. सुनयना सिलाकारी के हाथों का छायांकन

छाया मानस स्टूडियो विदिशा

रूपांकन गिरधर गोपाल उपाध्याय

मुद्रक अल्पा दूक इन्टरप्राइजेज भोपाल

प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
[illegible]
विदिशा (म.प्र.) 464001

UN HATHON SE PARICHIT HOON MAIN
Poems by Shalabh Shriram Singh

ISBN 81 7365 [illegible] 4
Library Edition Rs 70/-



अपनी सबसे छोटी बेटी
सज्ञा के लिये
बडी हो रही है जिसकी दुनिया।

— शलभ

क्रमत

•

गोत्र शलभ

'शलभ से हिन्दी कविता का एक नया गोत्र प्रारम्भ होता है। उन्हें किसी मठ में शरण लेने की आवश्यकता नही है।

नागार्जुन

शलभ को अलग पहिचान देने वाली और अपने समय का महत्वपूर्ण कवि बनाने वाली चीज है उनकी व्यापक सकारात्मक पक्षधरता और पूर्वाग्रह से पूर्णत मुक्त जीवन दृष्टि जो परम्परा से आधुनिकता के बीच एक सेतु का निमार्ण करती है न कि अपरिचय और अलगाव की खाई का। शलभ समकालीन साहित्य क जगल में एक दोहरी लडाई लड रहे हैं।अपने बिरादरी भोज में उनका प्रवेश हर पक्ति में बैठ लोगों को परेशान कर देता है और यद्यपि उनको नकारना असम्भव है स्वीकारना भी कुछ आसान नही।

समग्र मानवीय चेतना सम्पूर्ण चराचर विश्व, समस्त शरीरी अशरीरी ब्रह्माण्ड इतिहास परम्परा बोध के साथ कदम ब कदम चलती विज्ञान तकनीकी और नवजात आर्थिक औद्योगिक सम्कृति से प्रभावित समाज और उसके परिवर्तनशील जीवन मूल्यों की पहिचान और समझदारी उसकी पतनशीलता और कु ठा ही नही,उसकी सभावनायें भी उनकी कविता में जीवन्त अभिव्यक्ति पाती हैं।

उनका युगबोध उपदेशात्मकता के सतही स्तर स ऊपर है ये जीवन का अकलुष चकित नेत्रा से देखते हैं, उनकी कविता इस शापग्रस्त युग में बदलाव की पीडा को अभिव्यक्त करती है वे नारीत्व को अनुस्यूत एकात्मक रूप से देखते हैं, उनमें पर्वत जैसी दृढता, पयस्विनी जैसी मृदुता है वे पृथ्वी को जड पदार्थ नही मानते उसके समक्ष प्रणत होने में उनकी आसक्ति है उनमें ग्रहान्तर पर पाव रखने को आतुर मनुष्य की अविराम यात्रा की चेतना है, वे तात्कालिकता के सदर्भ में भी शाश्वत विषय वस्तु से निरतर जुडे हैं यह सब कुछ समय समय पर विभिन्न प्रतिष्ठित साहित्यकारों, आचार्यो और आलाचकों द्वारा शलभ के बारे में कहा जा चुका है।

महेद्रप्रताप सिंह के अनुसार शलभ सवाद धर्मी कविता के सहज पाठकों की मुक्ति क कवि हैं। जगदीश गुप्त के अनुसार उनका शब्द सामर्थ्य आसधारण है। आचार्य कल्याणमल लोढा के अनुसार उनकी भाषा में न कृत्रिम प्रवाह है न आरोपित शब्द चयन। विजय बहादुर सिंह उन्हे शब्द छन्द के मिश्रित सस्कार वाले कवि मानते हैं जिनकी रचना बधी बधाई चौहद्दियों का अतिक्रमण करती है।

इद्र बहादुर सिंह ने शलभ के सग्रह अतिरिक्त पुरुष' की प्रस्तावना में लिखा था कि वे शब्दा-अर्थो की लय से पृथक बिम्बों की लय' के साथ नितात

नये रूप में पदक्षेप करने वाले कवि हैं। सुधा अरोडा कहती हैं कि शलभ जैसे प्रतीक अग्रेजी कविताओं में ही मिलते हैं।

यह कहा जा सकता है कि शलभ कविता को जन सामान्य की वैचारिकता और अनुभूति के समानान्तर यात्रा के योग्य बनाये रखना चाहते हैं और उन छद्म प्रयोगवादी रचनाकारों से अलग हैं जो दुरूहता और जटिलता की आयातित शैम्पेन में मौज मस्ती करते हैं जहा उनके साथ सामान्य जन नही कविता को पढने सुनने समझने की सहज आकाक्षा रखने वाले पाठक भी नही उनकी अपनी बिरादरी के वैस ही ऐयाश रचानाकार होते हैं जो साहित्य के एक नये आभिजात्य की सृष्टि कर रहे हैं।

युयुत्सावादी काव्य दर्शन के प्रमुख प्रवक्ता गोरिल्ला आलोचना के प्रवर्तक नवगीत धारा को नयी अर्थवत्ता शब्दावली और छन्द देने वाले (इद्र बहादुर सिंह क अनुसार) शलभ साहित्यकारों आलोचकों और हमपेशा कवियों की बिरादरी में खूब जान पहिचाने जाते हैं और उनके कथ्य और शैली पर काफी बडे पैमाने पर बडी तादाद में प्रामाणिक व्यक्तियों ने पूरी जवाबदारी के साथ अपनी राय का इजहार किया है।फिर भी यह सच है कि शलभ का समग्र मूल्याकन अभी होना है। यह मूल्याकन न हो पाना किसी सुनियोजित साहित्यिक षडयत्र का हिस्सा नही है किसी जानी मानी फ्रेम में फिट न कर पाने की हमारे आलोचका की मजबूरी का परिणाम है जो रचनाकार को किसी फ्रेम में फिट किये बिना उसका मूल्याकन करने की कला से अनभिज्ञ होते जा रहे हैं। फिर शलभ उनको चारा भी नही डालते। अपनी शर्तों पर जीने लिखने और माने जाने की उनकी जिद गालिब की इन पक्तियों की याद दिलाती है

बदगी में भी अजब आजादह व खुदबी है कि हम,
उल्ट फिर आये, दरे- काबा अगर वा न हुआ।

परन्तु क्या मूल्याकन होन न होने से शलभ की काव्य यात्रा रुक सकती है? वह जारी है प्रतिदिन नई प्राणवायु से ऊर्जावान नये भितिज नये आयामों की तलाश करती आदमी के भीतर और बाहर की बिना लाग लपट के परन्तु अनुराग के साथ जाच पडताल करती उसकी चेतना को अपने शब्द छन्द बिम्ब और लय देकर अपन आपसे साक्षात्कार के लिए उत्प्रेरित करती हुई। वह सृष्टि रचना की उस अदम्य लालसा से प्रेरित है जो निन्दा प्रशसा देखी अनदखी सुनी अनसुनी से निरपेक्ष है। वह शिव ताडव की तरह अपनी अभिव्यक्ति मात्र में सम्पूर्ण है। उसके सामने मूल्याकन होना न होना बहुत छोटी सी बात है। मूल्याकन न उसमें कुछ जोड सकता है न उसमें से कुछ घटा सकता है। वह हमारे साहित्य ससार की जरूरत है न कि शलभ की।

हरिवश सिलाकारी

जीवन-परिचय

नाम
शलभ श्रीराम सिंह
पिता
श्री राम खलावन सिंह
माता
श्रीमती वासुदेवी सिह
जन्म - तिथि
5 अक्टूबर 1938
जन्म - स्थान
ग्राम मसोढ़ा कस्बा जलालपुर जिला फैजाबाद सूबा उत्तरप्रदेश (भारत)
निजी जीवन
बोहेमियन हाड मास और पानी से प्यार जीने की अनिवार्य शर्त कविता। स्वतंत्र लेखन एवम् पत्रकारिता के सिलसिले में लगातार भ्रमण
रचना की मूल प्रेरणा
युयुत्सा। हिंदी नवगीत को जन बोध का धरातल प्रदान करने वाले प्रथम कवि। युयुत्सु कविता के पुरस्कर्ता और युयुत्सावाद के प्रवक्ता। 1955 56 से नियमित लेखन और प्रकाशन
प्रकाशन
कल सुबह होने के पहिले (1966) इन द फाइनल फेज (अंग्रेजी अनुवाद 1974) अतिरिक्त पुरुष (1976) घुमत दरा जाय कडा नाडार शब्द (बाग्ला)(1976) त्रयी 2 में सकलित (1977) राहे हयात(1982), निगाह दर निगाह (1983) नागरिक नामा (1983) कब्रिस्तान म सावधान सत्यजित र के उपन्यास का अनुवाद (1983) अपराधा स्वय (1985) पृथ्वी का प्रेमगीत (1991) ध्वस का स्वर्ग (1991) उन हाथों स परिचित हू मै (1993)
सम्पादन
अनागता परम्परा रूपाम्बरा निराला गल्प भारती युयत्सा अप्रत्याशित नया विकल्प कर्बला सवा ससार अनुगामिनी (दैनिक) दिगन्त (दैनिक)
अप्रकाशित
उगली में बधी हुई नदिया (नवगीत सकलन) एक गीत देश (काव्य) कारक (कहानी सग्रह) कावेरी (नाटक) शाम ए सफर (उर्दू कविता) उत्तर सवाद (युयत्सावादी काव्य दशन की व्याख्या) प्यार की तरफ जाते हुए (काव्य) दूसर वृक्ष पर (काव्य) जीवन बचा है अभी (काव्य) फिलहाल इतना ही (काव्य)

सम्प्रति उत्तर सवाद' केसम्पादन परामर्शदाता और रामकृष्ण प्रकाशन केकाव्य सम्पादक पद पर कार्यरत



स्वाद मे हस्तक्षेप

वैज्ञानिक उपलब्धियों का दुरुपयोग प्राद्योगिकी के आधार पर हुआ असतुलित विकास पर्यावरण का निरन्तर प्रदूषण की चपेट में आना पूजी का लाभ लोभ की दृष्टि से किया गया असमान वितरण राजनीति का मूल्यहीनता की दिशा में धकियाया जाना ज्ञान और व्यवहार की भिन्नता की प्रकृति को सीचने वाली शिक्षा के क्षेत्र मे प्रातिभ प्रतिबद्ध भद्रजना का पलायन और युवा मन की प्रश्नाकुल सचेतनता को सुसस्कारित करके व्यापक राष्ट्रीय हित में नियोजित करन क बदले छुद्र स्वार्थो की पुर्ति के लिए उपयोग में लात हुए अपसस्कृति के दलदल में ढकेला जाना आदि मसले हमारे समय के समक्ष एक जटिल प्रश्नावली के रूप में खडे हैं और हमारे समाज को भविष्यहीनता के जगल की आर हाँक रहे हैं। ऐसे में यदि हमारे समय की महत्त्वपूर्ण प्रतिभाएँ हताश और हतवाक् होकर शब्द कर्म की सार्थकता का सदह की दृष्टि से देखन लगें अथवा उसकी निरर्थकता को रेखाकित करते हुए रचनाधर्मिता की उपयागिता के सामने सवाल खडा करने पर उतर आए तो आश्चर्य की कोई बात नही है।

प्रश्न यह है कि क्या उन प्रतिभाओ की क्षमता सीमा को अपने समाज की प्रज्ञा सीमा मान लिया जाये? हारे हुए महारथियो की पुरानी पड गई शब्द नीति स जनमी विफलताओ के रोदन का महत्व दन का समय मेरे विचार से यह नही है। इसके ठीक विपरीत यह समय नई प्रतिभाओ की ओर स्नेह और सम्मान के साथ देखने का है उन के समीप जान का है। उनके साथ सवादरत होकर अपनी सोच और समझ को धारदार बनात हुए सवेदना के क्षेत्र में ऊसर की प्रकृति का बढावा देन वाली समस्त परजीवी वनस्पतिधर्मा प्रवृतियो को कतर दन का है जिनक चलते निराशा का यह वातावरण निर्मित हुआ है। यदि आज की परिस्थितियों की पडताल सतर्क ओर सक्रिय दृष्टि से की जाये तो स्पष्टत यह दिखाई देगा कि रचनात्मकता के लिए इसस बेहतर समय ससार के प्रतिभा पुरुषो के लिए आज से पहले कभी रहा ही नही। चुनौतियो का मोर्चा जितना जबर्दस्त होता है प्रतिभाओं के लिए खुद को आजमान के अवसर भी उतने ही अधिक होते हैं। इतिहास के लम्बे यात्रा पथ पर चलकर आये इन अवसरो की उपेक्षा का समय यह नही है।

एसा शुभ अवसर किसी जाति और युग के जिन रचानाकारों को प्राप्त होता है वे अन्यतम हुआ करते हैं। इस रूप में आज की भारतीय रचनाकार बिरादरी की प्रज्ञा प्रभुता उस अन्यतम सिद्ध करन के लिए पर्याप्त है। अपेक्षित है उदार व्यापक और मैत्रीपूर्ण विश्वदृष्टि जो अपनी व्यापकता म शुभ सदर्भो की पहचान करान वाली तो हो ही अशुभ सदेशो से सावधान करने वाली भी हो। हमारी इस रचनाकार बिरादरी के लिए विषय वस्तु का अभाव न तो आज है न कल था। भाव भाषा शिल्प और शैली का अशेष भण्डार नि शेष कहाँ हुआ है भला? हमारी सवेदना के दरवाजों पर विरुचि और विरूपता के कवच पहने खुर्दुरे और बेडोल यथार्थ की चट्टानें यदि खडी हैं तो उन्हें इच्छित आकार देन और सही ठिकानों पर स्थापित करने वाली बुद्धि और विवेक से हमारी कला चेतना वचित कहाँ है? भावनाओं के तरल गतिमान स्रोत जो पूरे वेग के

साथ टकराने के लिए छटपटा रहे हैं उन्हें उन चट्टानों की दिशा में काई माडकर ता देखे। चट्टाना की सुनिश्चित परिणति इस कार्य व्यापार की प्रतीक्षा कर रही है। तमाम अमानवीय, अकाव्यात्मक उपद्रवों के बावजूद प्रकृति की अद्यावधि अदृश्य अनाम रूपछविया ओर सहज जिज्ञासु विवेकी मानव मन के बीच जो एक रागमय सवाद टुकडो टुकडों में चल रहा है क्या वह कविता का विषय नही हो सकता? क्या मनुष्य ने रूप और स्वरूपों में अन्तर्निहित सौंदर्य की ओर से सचमुच आखं मूद ली है? क्या उसका अनुराग बोध हमेशा हमेशा के लिए समाप्त हो चुका है? नही। निश्चित रूप मे नही ।। ऐमी स्थिति में सदिग्ध नैतिकता वाले समाज में आवश्यक होने पर अनैतिक कहे जाने का खतरा मोल लेकर भी उस अनुराग क्षेत्र में प्रवेश करना होगा।

अपने मुहाने पर सर्वस्तरीय विभीषिकाओं को साथ लेकर खडी इस शताब्दी की विसगतिया विरोधाभासों निर्मूल्यताआ आर अन्यान्य मानवता विरोधी पक्षों पर प्रहार करना होगा। मेरा निश्चित मत है कि रास्ता मिलेगा। शर्त बस एक ही है कि हमारी चिन्ता नये सृजन की सभावनाआ को टटालने और नये उन्मेष के सपना का पहचानन की होनी चाहिये। इसके विपरीत यदि किसी शब्दकर्मी की चिन्ता अपनी निजी छवि का चमकाने ओर सुविधाओं का ससार सजान की हा तो उसे अपने समय में देव सस्कृति के नष्ट हो जान क कारणों पर विचार करते हुए शब्दक्षेत्र से विदा हान के लिए विवश होना पडेगा। यह समय तीर्थ क्षेत्र में बलात्कार का नही है।

उन हाथा स परिचित हूं में की कुछ कविताओ म मैंने अपने समय और समाज का सभावित परिणतिया के प्रकाश म दखने और समझने का प्रयास किया है। उसम मेरी चिन्ताए भी हैं हिदायत भी और आगाही भी। क्रूर कठोर परिस्थितिया स निपटने की प्रतिबद्ध प्रतिज्ञा के स्वर भी एकाधिक कविताआ म मिलग। कुछ कविताओं म विचारा ओर भावनाआ की सुपरिचित सरणिया की झलक मिलेगी ता कुछ कविताएँ सुविज्ञ सहृदयजनों को वर्जित अनुभव क्षेत्रा के निपिद्ध अनुभूति कक्षों तक पहुचाकर यह प्रश्न कर सकती हैं कि सचमुच अनुभव कये क्षेत्र ओर उनकेभीतर अवस्थित अनुभूति कक्ष वर्जित और निपिद्ध घापित किये जाने योग्य हैं?आशा है इस प्रश्न का भी उचित आर विधेयात्मक उत्तर मिलेगा।

अन्त म यह कि बौद्धिक जटिलता और रागहीन अनुभव क बीहड से हमारी कविता बाहर निकल आई है और जाने पहचाने दृश्या स हमारी निकटता काव्य सवदना का परिसस्कार करने लगी है । वह एक प्रत्यक्ष पुरुपार्थी सत्ता क रूप म नय मानव भविष्य की रचना क लिए कृत सकल्प और प्रयागा मुखी है।

कविता के इस अभियान की पदध्वनिया यहा इस सग्रह की कविताआ म भी सुनी जा सकती हैं। अलम

27 दुर्गा नगर — **शलभ श्रीराम सिंह**
विदिशा (म प्र) भारत 464001 — **1993 2 19**

उन हाथों से परिचित हूँ मैं

एक दिन



पृथ्वी पर जन्मे
असख्य लोगों की तरह
मिट जाऊँगा मैं

मिट जाएँगी मेरी स्मृतियाँ
मेरे नाम के शब्द भी हो जाएँगे
एक दूसरे से अलग
कोश में अपनी अपनी जगह पहुँचने की
जल्दबाजी में
अपने अर्थ तक समेट लेंगे वे

शलभ कही होगा
कही होगा श्रीराम
और सिंह कही और

लघुता मर्यादा और हिंस्र पशुता का
समन्वय समाप्त हो जाएगा एक दिन
एक दिन
असख्य लोगों की तरह
मिट जाऊँगा मैं भी

फिर भी रहूँगा मैं
राख में दबे अगार की तरह
कही न कही अदृश्य अनाम अपरिचित
रहूँगा फिर भी फिर भी मैं।



विदिशा
1991

पृथ्वी के मोहभग का समय

•

यहाँ
परिन्दा से छीना जा रहा है
आकाश

वनस्पतियों से
हरियाली छीनी जा रही है यहाँ

छीना जा रहा है नदियों से उनका प्रवाह

पानी के विद्रोह का समय समीप है
समीप है समय वनस्पतियों की बगावत का
पृथ्वी के मोहभग का समय समीप है अब

•

नई दिल्ली
1991

बहुत दिनों तक

•

पृथ्वी हिलेगी नहीं इस बार
धधकेगी भी नहीं
डूब जाएगी अपने ही पानी में अकस्मात

अपने विस्तार के साथ
अपने ही पानी में डूबी पृथ्वी
केवल प्रायश्चित करेगी शताब्दियों तक

यह सब देखता रहेगा निरभ्र आकाश
नक्षत्र लीला में ग्रह विलय की तरह चुपचाप

सूर्य के सस्पर्श की प्रतीक्षा करेगी
जल में समाधिस्थ वसुधरा
निर्विकार निश्चल निर्लिप्त
मनुष्य के विषय में
कुछ भी न सोचती हुई
डूबी रहेगी अपने ही पानी में बहुत दिनों तक

•

नई दिल्ली
1991

दिल्ली के जाने का समय



बचपन की मुस्कुराहटों पर
रखे जा रहे हैं पत्थर
गिरवी रखे जा रहे हैं जवानी के सपने
बुढापे की उमीदों को धोका दिया जा रहा है
दिन रात

तकनीकी नाकेबन्दी की जकड में है गगा
यमुना के गले में उग रही हैं ककडों की फसल
समुद्र को अलविदा कहने पर
मजबूर की जा रही है नर्मदा

गोमुख का भूगोल टेढा हो रहा है
टेढा हो रहा है हरि की पैडी का भूगोल
हरिद्वार का भूगोल टेढा हो रहा है

मेरठ के जाने का समय है यह
समय है कानपुर प्रयाग पटना और कलकत्ता के जाने का
दिल्ली के जाने का समय है यह
सरस्वती पथ का सरण करने वाली है गगा



नई दिल्ली
1991

दिल्लियाँ



हाथी की नंगी पीठ पर
घुमाया गया दाराशिकोह को गली गली
और दिल्ली चुप रही

लोहू की नदी में खड़ा
मुस्कराता रहा नादिर शाह
और दिल्ली चुप रही

लाल किले के सामने
बन्दा बैरागी के मुँह में डाला गया
ताजा लहू से लबरेज अपने ही बेटे का कलेजा
और दिल्ली चुप रही

गिरफ्तार कर लिया गया
बहादुरशाह जफर को
और दिल्ली चुप रही
दफा हो गए मीर और गालिब
और दिल्ली चुप रही

दिल्लियाँ
चुप रहने के लिये होती हैं हमेशा
उनके एकांत में
कहीं कोई नहीं होता
कुछ भी नहीं होता कभी भी शायद



नई दिल्ली
1991

दिल्ली में

•

कारों की रेस में
शामिल बैलगाडियाँ
खुश हैं घोडा गाडियों को देखकर
सभ्यता का विकास बरकरार है यहाँ
सर के ऊपर से गुजरते हवाई जहाजों के
बावजूद

चहरे या तो बेरंग हैं
या फिर बदले हुए
मुलाकातें मुलाकातों की तरह नहीं हैं
प्रेमिकाएँ तक झूठ बोलती हैं यहाँ
दोस्त कहे जाने वाले लोग भी

प्यार और दोस्ती के लिए
झूठ जरूरी है दिल्ली में
जमुना के बे सेहत पानी की तरह

•

नई दिल्ली
1991

कौन

•

कौन ले जा रहा है मनुष्य को
सामूहिक आत्मघात की दिशा में बिला झिझक?
सभ्यता को
ध्वसावशेषों के हवाले करना चाहता है कौन?

भाषाओं को
हथियारों में ढाल रहा है कौन?
कौन क्षेप्यास्त्रों में तब्दील कर रहा है
संस्कृतियों को ?
जीवन शैलियों को
साम्प्रदायिकता के हलाहल का रूप दे रहा है कौन?

विज्ञान के
विनाशकारी उपयोग का
सपना देखने वाला कौन है सत्ताओं के सिवा
इस दुनिया में ?

•

नई दिल्ली
1991

एक दुनिया समानान्तर



विज्ञापनो के बाहर भी
एक दुनिया है बच्चों की
उदास और मायूस

विज्ञापनों के बाहर भी
एक दुनिया है टाँगो और बाँहों की
काँपती और थरथराती हुई

विज्ञापनों के बाहर भी
एक दुनिया है आवाजों की
लरजती और घुटती हुई

विज्ञापना के बाहर भी
एक दुनिया है सपना की
बेरौनक और बदरंग



नई दिल्ली
1991

हमारी धरती कहाँ है?

•

मोआवजा लेकर
गाँव छोड़ देने को तैयार हैं लोग
देश छोड़ देंगे मोआवजा लेकर एक दिन

गाँव और देश को इस तरह बेचने वाले लोग
कहाँ से आ गए हैं
हमारी दुनिया में?

कहाँ से आ गए हैं
गाँव और देश के खरीददार
माँ और माटी के इन सौदागरों को
किस धरती ने जन्म दिया है आखिर?

क्या इसी धरती ने?
फिर यह धरती हमारी कहाँ रही?
हम किस धरती को अपनी कहकर पुकारें?

हमें जन्म देने वाली
हमारी धरती कहाँ है इस धरती के भीतर?
इसी सवाल में तब्दील होता जा रहा हूँ मैं
उन तमाम लोगों की तरह
जो इसी सवाल में तब्दील होते जा रहे हैं।

•

नई दिल्ली
1991

सिक्को से लडा जाने वाला युद्ध



बच्चों की खोपडियो का व्यापार
हो रहा है यहाँ
व्यापार हो रहा है उनकी हड्डियों का
गुर्दों आँखो और खून का व्यापार
हो रहा है उनके

सौ रुपये किलो
पालक खरीदने के लिए
तैयार हो रहा है देश

तैयार हो रहा है जनगण
एक कभी न खत्म होने वाले युद्ध के लिए
सिक्कों से लडा जाने वाला यह युद्ध
शुरू हो चुका है पृथ्वी पर



नई दिल्ली
1991

यह रास्ता गुनगुनी धूप और
ठण्डी हवाओं का है
औरतों का इस रास्ते से गुजरा जाय
बेझिझक

यह रास्ता नये सपनों और नई मंज़िलों का है
पूरी कौम का उतारा जाय इस पर

यह रास्ता भविष्य का है
सुरक्षित हर तरह से सम्पूर्ण मानव जाति के लिए
इस पर हम सब को साथ साथ चलना है

•

विदिशा
1991

डर

•

ज्ञानियों से लगता है डर
डर गुणी जनों से लगता है
अनुभवी जनों से लगता है डर

ज्ञान गुण अनुभव के बिना
जिया गया जीवन निरर्थक नहीं है फिर भी

डर का घर कि यह जीवन
ज्ञान गुण अनुभव के बिना भी
सार्थक है

ज्ञानियो से डरने के लिए
डरने के लिए गुणी जनों से
अनुभवी जनों से डरने के लिए
ज्ञान गुण अनुभव से हीन जीवन जरूरी है

•

विदिशा
1991

स्वप्न-कथन

•

हिरन पर आई हुई है
हथिनी करे संबोधन
कबूतर मादा बाज पर फिदा है

मौत और मुहब्बत के इस खेल में
शामिल नहीं है शब्द
कविता शामिल नहीं है
मनुष्य शामिल होने की तैयारी कर रहा है
शायद

खेल को और   और
दिलचस्प बना देने के लिए
मनुष्य का शामिल होना जरूरी है
उसमें

•

विदिशा
1991

अपने लिए

•

पहले एक लकीर बनी
फिर रोलर घूमने लगा
याददाश्त के ऊपर

यत्रणा का ऐसा स्वरूप
इससे पहले कहाँ था दुनिया में ?

सभ्यता का यह अभिनव दण्ड विधान
मुबारिक हुआ हम को अपने आप
शरीर के अनुसार सजा खोजी हमने
अपने लिए

अपने लिऐ बहुत कुछ खोजा हमने
यहाँ तक कि सर्वनाश भी

•

विदिशा
1991

दण्डित होने के लिए

•

फिर फिर किया गया प्यार
फिर फिर दण्डित होने के बावजूद

चिड़िया का बच्चा बना रहा
ज़माने भर के लोगों के हाथ में
उम्र भर
फिर फिर दण्डित होने के लिए
फिर फिर करता प्यार
जीता रहा इस उम्मीद में
कि शायद कभी
ज़माने की शक्ल का बदले
या फिर अचानक ही बदल जाए मेरी
उम्र के साथ

नहीं हुआ ऐसा कुछ भी अब तक
फिर फिर किया गया किया गया प्यार
फिर फिर दण्डित होने के लिए.

•

विदिशा
1991

उजाले के पक्ष मे

●

अँधेरा मन के भीतर था
उजाले की राह रोक कर खडा
अँधेरे के खिलाफ
क्या कर सकता था मैं
खुद को जला देने के अलावा?

उजाला हतवाक
कि एक इसान जल रहा था
उसके पक्ष में खडा खडा

एक कवि
लिख रहा था
इस समूचे घटनाक्रम को
अपनी कविता में
इस तरह

●

विदिशा
1991

प्रतिप्रेम

•

यह कि जिसकी मौत कभी नहीं होती
निर्दोष और निर्विकार है जो
किसी भी शरीर में रह
किसी भी रूप में
किसी के पास
चिन्ता क्यों होती है उसको लेकर
क्यों होती है शंका अपने अंत की?

हित ही साथ न हो जिसका
कैसे करेगा अंत?
किसी भी शरीर में
किसी भी रूप में
किसी के भी पास रहकर
है तो निर्दोष
है तो निर्विकार
यह कि जिसकी मौत कभी नहीं होती

•

विदिशा
1991

प्रेमकविता



जिसने दिया
लिया भी उसी ने
काहे का दुख
अगर ले ले कोई
अपनी दी हुई चीज।
कहाँ थी उम्र अपनी?
कहाँ था सुख?
दुख तक अपना कहाँ था भला?
ज्ञान कहाँ था अपना?
कहाँ था अज्ञान?
कहाँ थी हँसी?
रुदन कहाँ था अपना?
जिसका था ले गया वही



विदिशा
1991

व्यर्थता

●

कंधे पर रखा हाथ
मन को न छू रहा हो अगर
व्यर्थ है

चेहरे पर टिकी निगाह
आत्मा को न देख रही हो अगर
व्यर्थ है

आलिंगनबद्ध देह
प्राण की सीमा न लाँघ रही हो अगर
व्यर्थ है

●

दिल्ली

1991

आगमन

•

देहरी पर पाँव
हँसी होंट पर
मन आँखों में उतर आया
उँगलिया में प्राण
साँस में सर्वस्व

आगमन का ऐसा सुख
प्रभु के आगमन से पृथक कहाँ है
मनुष्य के घर में ?

•

विदिशा
1991

संवाद मृत्यु का था

•

संवाद
मृत्यु का था
मुझ में और
जीवन
फन बचाते साँप की तरह
आँखों से दूर होने के दुख से
विचलित हुआ थोड़ा थोड़ा
और
खड़ा हो गया
फुफकारने के अन्दाज में
काल के विरुद्ध काल की तरह
बराबर की जोड़ का
साहस और बल लेकर
और गले के नीचे उतरा
संवाद मृत्यु का होने के बावजूद

•

विदिशा
1991

खुद को छलने के लिए

•

अमृत का नाम सुना
अमर होने का सपना देखने लगे
नाम सुना सुख का
स्वर्ग का मनचाहा नक्शा बना डाला
मन ही मन
प्यार का नाम सुना
मर मिटे किसी मनचाही सूरत पर
अमृत और सुख और प्यार
तीनों से दूर
अकेले अकेले अपने से जूझना
पडोसी तक से न पूछना कि कैसे हो ?
खुद को छलने के लिए
इतना क्या कम है ?

•

विदिशा
1991

चूक

•

बिना बुलाये आया था प्यार
अहंकार की बाँह में बाँह डाले
अपने पर मुग्ध
आँख उठा कर देखा भी नहीं
उसकी ओर
सावन की फुहार की तरह
बरसा था आशीर्वाद,
जेठ के घाम की तरह
अपने में तपते
शाप ही सहेजते रहे
छाँव को छूकर

•

विदिशा
1991

जीने के लिए



दाँत के दर्द की तरह
अखर रहा हूँ खुद को
किरकिरी की तरह
करक रहा हूँ अपनी आँख में
काँटे की तरह
धँसा हुआ हूँ पाँव में अपने
जीने के लिए बेहद जरूरी है
थोडी बेशर्मी
हिम्मत थोडी थोडी
थोडा थाडा कुछ भी छोड देने का
अभ्यास



मसोढा
1992

बैठी होगी संज्ञा

•

चाय का वक्त है यह
यह नाश्ते का
यह दोपहर के खाने का वक्त है
रात के खाने का वक्त है यह

अपने कमरे में बैठी होगी संज्ञा
अपनी दुनिया में खोई

अपनी किताबों के साथ
सोचती हुई अपने बारे में

मेरे बारे में सोचती हुई
सोचती हुई उस हर आदमी के बारे में
उसके बारे में सोचता है जो

•

विदिशा
1992

प्रार्थना



तुम्हारे लिए प्रार्थना की मैंने
प्रार्थना तुम्हारे सपनों के लिए
जीवन के लिए प्रार्थना की तुम्हारे

अपने लिए प्रार्थना की मैंनें
अपने सपनों के लिए
जीवन के लिए अपने

सब के लिए प्रार्थना की मैंने
सबके सपनों के लिए
जीवन के लिए सबके, प्रार्थना की



विदिशा
1992

बतियाता रहता हूँ उसी से

•

उसकी समझ में
नहीं आतीं मेरी बातें
फिर भी
उसी से बतियाता रहता हूँ
दिन —रात

बतियाता रहता हूँ
शायद पकड़ में आ जाए उसकी
मेरी कोई बात
उसकी कोई बात
समझ में आ जाए मेरी

उसकी हंसी और उसकी उदासी
मेरी नहीं होगी उस दिन
जिस दिन
समझ लेंगे हम
एक— दूसरे की बातें

•

मसौदा
1992

तुम्हारी दुनिया बड़ी हो रही है

•

तुम्हारी दुनिया बडी हो रही है
बड हो रहे हैं तुम्हारे सपने
तुम्हारे विचार बडे हो रहे हैं

बडी दुनिया
बडे सपनों और बडे विचारों के
खतरे भी बड़े होते हैं
बडी होती हैं उलझनें
जटिलताएँ और बडी होती हैं उनकी

बडी दुनिया का बडप्पन
अपने खतरों के बडप्पन पर जीता है
खतरों का यह बडप्पन
एक बडी दुनिया की बुनियादी जरूरत है
तुम्हारी दुनिया बडी हो रही है

•

मसोढा

1992

मजाक नहीं होने दूगा मैं

●

सभावना के साथ मजाक नही होने दूगा मैं
नही होने दूगा मजाक उस इच्छा के साथ
ईख की नन्हीं पत्ती की तरह सर उठा रही है जो
जिसमें जीवित है मेरे आखिरी दिनों का सपना

सब कुछ-सब कुछ भले लग जाय दाँव पर
यहाँ तक कि जीवन भी
सभावना को उपलब्धि तक पहुचने में मदद करूगा
मदद करूगा इच्छा के आकार लेने तक
आकाक्षा के पूरी होने तक मदद करता रहूँगा मैं

उसी में
अन्तत उसी में जीना है मुझको
जिसकी सभावना के साथ होने वाला है मजाक
मजाक होने वाला है जिसकी इच्छा के साथ
आकाक्षा के साथ मजाक होने वाला है जिसकी
सभावना के साथ मजाक नहीं होने दूँगा

●

मसोढा

1992

खतरा

•

खतरे कई कई शक्लों में आते हैं
कई कई तरह के मुखौटों में
कई कई बार

एक खतरा प्यार के लिबास में आता है
दूसरा रंगो से खेलते चित्रकार की तरह
तीसरा रिश्तों की नकाब में
चौथा नींद की हँसी बनकर
पाँचवाँ दोस्तों की चमकदार बातों में छिपकर

अपने बहुरूपियेपन की तमाम खूबियों से भरा
खतरा फिर भी खतरा है

खतरा चिडिया की आँख को
पेड की डाल में बदल सकता है
फूल को आकाश पहाड और जगलमें
जिन्दगी की दलदल में बदल सकता है खतरा

खतरे कई कई शक्लों में आते हैं
यहाँ इन शब्दों के बीच भी है खतरा
तुम्हारी अक्लों का इम्तहान लेता
तुमको तुम्हारे मुकाबले खडा करता
खतरा इन शब्दों के बीच भी है

•

मसोढा
1992

खतरों से निपटने के लिए

•

खतरा से निपटने के लिए
चाहिए एक तेज निगाह
एक सधा कदम
एक न टूटने वाली आशा
एक सतर्क विवेक
तुम्हारे निजी सपनों की खुराक है यह सब

सपनों का जिन्दा रहना
खुद को जिन्दा रखने से ज्यादह जरूरी है
अगर कोई मजबूरी है सपनों के मरने की
मुर्दा सपनों के ढेर में शामिल कर दिये जायेंगे
तुम्हारे सपने
खत्म हो जाएगी तुम्हारी पहचान औरों की तरह
औरों की तरह छोटी होती जाएगी तुम्हारी दुनिया
और तुम्हारा कद
तुम्हारी अपनी निगाह में छोटा हो जाएगा
एक दम

•

मसोदा
1992

तुमने कहाँ लडा है कोई युद्ध



कमजोर घोडो पर चढ़कर युद्ध नही जीते गए कभी
कमजोर तलवार की धार से मरते नहीं हैं दुश्मन
कमजोर कलाई के बूते उठता नही है कोई बोझ

भयानक हैं जीवन के युद्ध
भयानक हैं जीवन के शत्रु
भयानक हैं जीवन के बोझ

तुमने कहाँ लडा है कोई युद्ध ?
कहाँ उठाई है तलवार अभी तुमने ?
कहाँ संभाला है तुमने कोई बोझ ?

यथार्थ के पत्थर
कल्पना की क्यारियों को
तहस नहस कर देते हैं

कद्दावर घोडों
मजबूत तलवारों
दमदार कलाइयों के बिना
मैदान मारने की बात बे मानी है

आत्महत्या का एक रास्ता उधर से भी है
जिधर से गुजरने की नासमझ तैयारी में
रात को दिन कहने की जिद कर रही हो तुम

युद्ध
कमजोर घोडों पर चढकर
कभी नही जीते गए



मसोढा
1992

अपना सवाल



बार बार पीछे मुडना
रुकना और रुक रुक कर देखना
मंजिल पर न पहुच पाने के लिए काफी है

जिन्दगी और मौत के बीच
मंजिल तक न पहुँच पाने वालों की
एक भीड खडी है यानी यह दुनिया

कहाँ है तुम्हारा चेहरा ?
भीड के भीतर कि बाहर ?

यहाँ मेरे पास नही
वहाँ उसके पास नही
कही किसी के पास नही

नही है इस सवाल का जवाब
सवाल मेरा है न उसका न किसी और का
सवाल तुम्हारा है अपना



मसोढा
1992

नदी फिलहाल

•

दो हिस्सो में बँट गई है नदी
दो धाराओं में बहती हुई साथ साथ
दो दिशाओं में जाती हुई चुपचाप

कितनी बचेगी कहाँ
सूखेगी कितनी, इससे बेखबर
दो हिस्सों में बँट गई है नदी

न जमीन की प्यास रोक पा रही है उसे
न आसमान की भूख
न समुद्र की चिन्ता

अपने सुख तक से अपरिचित
अनभिज्ञ अपने दुख से
दो हिस्सों में बट गई है नदी

कितनी-कितनी धाराओं में बँटेगी अभी
बहगी कितनी कितनी दिशाओं में एक साथ
कितने कितने पठारों और कछारों से होकर
जानती नही है खुद भी
नदी दो हिस्सो में बँट गई है फिलहाल

•

मसाढा
1992

अनुभव



अनुभव की आँखे
सब कुछ देख लेती हैं
वह भी जो नही दिखाना चाहते हैं लोग

अनुभव की उँगलियाँ
वह तक छू लेती हैं
जिसे सबसे ज्यादह छिपाना चाहते हैं लोग

अनुभव की जीभ
जीभ के क्वाँरे स्वाद को पहचानती है

अनुभव के अग
जानते हैं अनुभवी अगो की भाषा

अनुभव से
कुछ भी नहीं छिपाया जा सकता
छिपता नही है अनुभव से कुछ भी

नगा है हर झूठ अनुभव के आगे
अनुभव के आगे नगी है हर सच्चाई



साबरमती एक्सप्रेस
1992

उस दिन

●

ईख की सूखी पत्ती का
एक टुकड़ा था बालों में
पीछे की तरफ

जरूरत से ज्यादह बढ़ गई थी
गालों की लाली

आईने में
अपने चेहरे की सहजता
सहेज रही थी तुम
खड़ी खड़ी

सब कुछ देकर चली आई थी
किसी को
चुपचाप

सब कुछ देकर
सब कुछ पाने का सुख था
तुम्हारे चेहरे पर उस दिन

उस दिन
तुमको खुद से शर्माते हुए
देख रहा था आईना

●

विदिशा
1992

आज कौन सी तारीख है?

•

दिनों में
सोमवार चुना तुमने
चुना बृहस्पतिवार

तारीखों में
एक तारीख
उन्नीस फरवरी

सोलह फरवरी भी
एक तारीख है मेरे लिए
एक तारीख है पाँच अक्टूबर

आज कौन सी तारीख है ?
दिन कौन सा है आज ?
कितना बजा है तुम्हारी घड़ी में इस वक्त?
मोर तो नही बोल रहा है कहो ?
टिटहरी की आवाज तो नही आ रही है कहीं से ?
उल्लू तो नही बोल रहा है रह–रहकर ?

•

अयोध्या

1992

1 कवि के मित्र डॉ विजय बहादुर सिंह की जन्मतिथि
2 कवि की अपनी जन्म तिथि 5 अक्टूबर 1938

पूर्वाभास

•

बुदबुदाहट के भीतर
एक-दूसरे से टकरा रहे थे शब्द

साँसों की बेरोक बगावत से
सहम गई थी हवा,

आँख न देख सकती थी
न कान सुन सकते थे कोई बात

दिल
पसलियों को तोड़कर
बाहर निकल आना चाहता था

कल रात्रि के सन्नाटे में ऐसा था
वह महामिलन का पूर्वाभास

•

मसोढा
1992

इतना क्या कम है?

•

फूलों को खिलने में
मदद की तुमने
प्रकृति तुम्हारी शुक्रगुजार हुई

अंधेरे को
एकांत का संगीत दिया तुमने
सपने कृतज्ञता से नत मस्तक हुए तुम्हारे आगे

जीवन को
जीवन की तरह जी लिया तुमने
समय ने व्यक्त किया तुम्हारे प्रति आभार

तुम ही तुम रही हर जगह हर बार
इतना क्या कम है ?

•

मसोढा
1992

पहली बार

•

पहली बार
इस तरह देखा है तुमने

पहली बार
तुम्हारी आँखो में
इस तरह खड़ा पा रहा हूँ खुद को मैं

न आँसू के साथ बह रहा हूँ
न घुल रहा हूँ आँखों की नमी में

तुम्हारी आँखो में
अपना कद बडा लग रहा है मुझे
बडा लग रहा है अपना होना

कैसे संभाल पाऊँगा मैं
अपने होने का यह बड़प्पन
तुम्हारी निगाहों के भीतर
जन्म ले रहा है जो ?

तुम्हारी आँखो के बाहर
कहीं नहीं हूँ मैं इस तरह
इस तरह देखा है तुमने पहली बार

•

मसौढा
1992

स्त्री का अपने अन्दाज मे आना

•

सुबह की ताजा हवा की तरह आती है एक स्त्री
आती है एक स्त्री आँधी की तरह
उमस आर घुटन की तरह आती है एक स्त्री

पत्ती की थरथराहट की तरह आती है एक स्त्री
एक स्त्री धूप की गरमाहट की तरह
चाँदनी की चुप्पी की तरह आती है एक स्त्री

परछाई की तरह आती है एक स्त्री उजाला में केवल
एक स्त्री आती है हँसी की तरह अच्छे दिना में
बुरे दिनों में बैचेनी की तरह आती है एक स्त्री

तुम्हारी तरह नहीं आती है कोई स्त्री
अपने अन्दाज में ठाक ठीक
अपने अन्दाज में ठीक ठीक
अपने अन्दाज मं स्त्री का आना
ईश्वरी हा जाना है

ईश्वरी पूजित हो सकती है केवल
प्यार नहीं कर सकती है किसी को वह
प्यार करने वाली ईश्वरी की हत्या कर देती है दुनिया

•

मसोढा
1992

दो दरवाजो के बीच



दो दरवाजों के बीच
चन्द लम्हों के भीतर
मन और जीवन की
कितनी कितनी लम्बी यात्राओं पर
निकलते रहे हैं हम साथ साथ अक्सर

दीन दुनिया से बेखबर
बेखबर घर ससार से
यहाँ तक कि अपने आप से बेखबर
अपनी साँसों के भूगोल में
वनस्पतियों की एक नई दुनिया समेटे
कितनी कितनी लम्बी यात्राओं पर
निकलते रहे हैं हम

फूलों का एक अदृश्य मौसम
हमारे आस पास रहा है अँधेरे में हमेशा
उजाले में रही है एक पृथ्वी
अपने सब से ज्यादह खूबसूरत सपनों से लैस

पृथ्वी के सपनों में वैसे रहे हैं हम
जैसे
हवा में सगीत
खून में गर्मी
फूल में रगत

दिन हो कि रात
होता रहा है यह सब कुछ
दो दरवाजों के बीच
मन और जीवन की
लम्बी यात्राओं के दरम्यान
जब जब साथ रहे हैं हम



मसोढा
1992

स्त्री का अपने अन्दाज में आना

•

सुबह की ताजा हवा की तरह आती है एक स्त्री
आती है एक स्त्री आँधी की तरह
उमस और घुटन की तरह आती है एक स्त्री

पत्ती की थरथराहट की तरह आती है एक स्त्री
एक स्त्री धूप की गरमाहट की तरह
चाँदनी की चुप्पी की तरह आती है एक स्त्री

परछाईं की तरह आती है एक स्त्री उजालों में केवल
एक स्त्री आती है हँसी की तरह अच्छे दिनों में
बुरे दिनों में बैचेनी की तरह आती है एक स्त्री

तुम्हारी तरह नहीं आती है कोई स्त्री
अपने अन्दाज में ठीक ठीक
अपने अन्दाज में ठीक ठीक
अपने अन्दाज में स्त्री का आना
ईश्वरी हो जाना है

ईश्वरी पूजित हो सकती है केवल
प्यार नहीं कर सकती है किसी को वह
प्यार करने वाली ईश्वरी की हत्या कर देती है दुनिया

•

मसोढा
1992

सार्थकता



बिना कहे कहा है जो कुछ तुमने
उसका एक भी हिस्सा अगर बचा रहा मेरे पास
मेरे शब्दों के अर्थ नित नये होते रहेंगे

शब्दों के नये अर्थ
किसी के दिये हुए मौन से उपजते हैं
उपजता है उसी में वाणी का वर्चस्व

वाणी का वर्चस्व यह मेरा
कि शब्दों के नये अर्थ
तुम्हारे लिए प्रार्थना में ढलें
मेरा निवेदन तुम तक पहुँचे
पहुँचता रहे मेरे बाद
इसी में है इसकी सार्थकता

फूल हों कि शब्द
उनकी सार्थकता निवेदित होने में है



मसोढा
1992

झुंझलाई लड़की के सवाल

•

पता नहीं
कब तक सहना पडेगा
मूर्खता का दुख ?
सरलता का संकट
झेलना पडेगा कब तक ?
कब तक सहेजना पडेगा
सहजता का जंजाल ?

पता नहीं
कब तक बनाते रहेंगे लोग मूर्ख ?
सुननी पडेगी कब तक
हर किसी की ऊल जुलूल बात ?
कब तक उलझा रहेगा
शब्दों की उलट– फेर में
जीवन ?
कब तक चलता रहेगा यह सब
यों ही?
पता नहीं । पता नहीं ।। पता नहीं ।।।

•

मसोढा
1992

मिला नहीं जा सकता हर किसी से

•

बात
हर किसी से की जा सकती है
मिला नहीं जा सकता है हर किसी से यहाँ

मिलना
हिस्सा हो जाना है किसी की जिन्दगी का
हो जाना है उसका अपनी शक्ति भर
होते जाना है जब जब आए होने का अवसर

बात
दुनियादारी है सीधी सीधी
सीधी सीधी खरीददारी है लोक हाट की
भाषा के हाट की जानकारी लेकर
लोग निकालते रहते हैं अपना काम
बात किसी से भी की जा सकती है यहाँ
मिलना हर किसी से कहाँ हो पाता है भला ?
बात में
बचा रहता है बचाने लायक सब कुछ
मिलने में जाता है सब से पहले वही
मन के भीतर
बचाने लायक कुछ भी झाँकता रहेगा जब तक
बात होती रहेगी केवल
बात हर किसी से की जा सकती है

मिलना
मन को ले जाता है
तन को ले जाता है अपने साथ
अपने साथ जीवन को भी ले जाता है मिलना
मिलना हर किसी के साथ नहीं हो सकता है यहाँ

●

मसोढा

1992

वहीं उचटेगी नींद



हर तिलिस्म टूटता है एक दिन
एक दिन होता है हर जादू बेअसर
छिन्न भिन्न होता है हर इन्द्रजाल
एक न एक दिन
नींद के उचटने पर
सपनों को टूटना ही है
अपने बारीक से बारीक
विस्तार के साथ बेवक्त बेमुकाम
हर सपने का अपना एक भयानक मोड़ है
वहीं छूटेगी प्रेमिका की बाँह
प्रेमी का कंधा छूटेगा वहीं
वहीं छूटेगी बच्चे की उंगली
दोस्त का साथ वहीं छूटेगा
वहीं उचटेगी नींद
हर सपने का अपना एक भयानक मोड़ है



साबरमती एक्सप्रेस
1992

कटती रही रात

•

बार बार तुम पर आया क्रोध
बार बार आया प्यार तुम पर
नहीं आई तो केवल नींद
क्रोध और प्यार की रस्साकशी में
कटती चली गई रात
हजार हजार टुकड़ों में
टुकड़ों में लाख लाख
कटती रही रात
आता रहा तुम पर क्रोध
प्यार आता रहा तुम पर बार बार

•

अयोध्या

1992

तुम्हारा अकेलापन



जिन्दगी ले जा रही है कि मौत
मेरा समय कि तुम्हारा अकेलापन
कोई न कोई तो ले जा रहा है मुझे जरूर

जिन्दगी भटकायेगी पहले की तरह
मौत अलविदा कहने पर मजबूर करेगी सबसे
मेरा समय बचे हुए कामों पर लगा देगा मुस्तैदी से

तुम्हारा अकेलापन उदासियों की
एक ऐसी दुनिया के हवाले कर देगा
सब कुछ होगा जहाँ तुम्हारे अलावा

कैसी होगी
उदासियों की वह दुनिया
तुम्हारे बगैर
तुम्हारे अकेलेपन की याद दिलाती ?



मसोढा

1992

उतना ही है जीवन

•

प्यार के पास अपनी आँख होती है
अपनी भाषा होती है प्यार के पास
होती है अपनी राह
देखता बोलता चलता हुआ प्यार
जहाँ होता है
जिन्दा रहता है जिन्दगी का अहसास
सुन्दर को देखता
बोलता हुआ सत्य को
शिव की ओर ले जाता प्यार
जहाँ, जितना है उतना ही है जीवन

•

मसोढ़ा

1992

प्रवेश किया तुमने



मेरे एकान्त मे प्रवेश किया तुमने
प्रवेश किया मेरी चुप्पी में
मेरी बेचैनी में प्रवेश किया तुमने
प्रवेश किया मेरे जीवन मे सहसा

अजन्ता में मेरी प्रवेश किया तुमने
प्रवेश किया एलौरा मे मेरी
मेरे कोणार्क में प्रवेश किया तुमने
प्रवेश किया मेरे खजुराहो में

अपने
एक एक उभार में अप्रतिम
अप्रतिम एक एक मुद्रा में अपनी
शिल्प और शैली में अद्वितीय
प्रवेश हुआ तुम्हारा जीवन में मेरे



साबरमती एक्सप्रेस
1992

अनुभव किया जा सकता है तुमको

•

आती हो तुम अंधेरे में प्रवेश करती है जैसे किरण
स्वर तरंग सन्नाटे में प्रवेश करती है जैसे
सुख की अनुभूति जैसे घोर दु ख के भीतर

रहती हो तुम एकान्त में स्मृति की तरह
गध की तरह फूल के भीतर
आकाक्षा की तरह मन में

होती हो तुम दूब के भीतर जैसे हरियाली
लाली जैसे नौधा पत्तियों के भीतर
पानी के भीतर जैसे ठण्ड

लिखा नही जा सकता है तुमको अक्षरा में
शब्दा में बोला नहा जा सकता है तुमको
तुमको जिया जा सकता है केवल
केवल अनुभव किया जा सकता है तुमको

•

मसोढ़ा

1992

प्यार केदुर्दिन मे

•

न मृत्यु तुम्हें छू पाएगी
न बुढापा
ऋतुओं का प्रभाव नहीं होगा तुम्हारे ऊपर

कविता के अन्तिम पाठक के सामने
उस दिन भी यही और यही रहेगा तुम्हारा रूप
जब पृथ्वी के आखिरी बसन्त का आखिरी फूल
आखिरी बार खिल कर मुरझा रहा होगा

मेरे कधे पर झुका तुम्हारा चेहरा
मेरी गोद में रखा तुम्हारा सिर
तब भी तब भी ऐसा ही रहेगा
शताब्दियों के सूर्यास्त की अशुभ सध्या
उतर रही होगी आकाश से जब धीरे धीरे

ऋतुओं का प्रभाव नहीं होगा तुम्हारे ऊपर
न मृत्यु तुम्हें छू पाएगी
न बुढापा

प्यार के दुर्दिन में
ससार के हताश प्रेमियों के लिए
कभी न टूटने वाले मजबूत सहारे का काम करती रहेगी तुम्हारी याद।

•

मसोढा
1992

गुस्सा तुम्हारा

•

मेरा तो कुछ भी नहीं रह गया था मेरे पास
फिर से सब कुछ दिया हुआ है तुम्हारा
गुस्सा और प्यार और जीने की ललक
गुस्सा तुम्हारा तुम पर ही उतरा
तुम पर ही बरसा तुम्हारा अपना प्यार
जीने की ललक के साथ
बार बार तुम्हारी ओर लपका जीवन
तुम्हारे अलावा किसको थी मेरी फिक्र ?
चिन्ता किसको थी तुम्हारे अलावा मेरी ?
किस पर उतारता गुस्सा तुम्हारे अलावा ?
तुम पर ही उतरा गुस्सा तुम्हारा
बरसा तुम पर ही तुम्हारा अपना प्यार ।।

•

मसोढा
1992

निजता के पक्ष मे

•

रिश्ता की
हर चौहददी तोड डालते हैं कुछ लोग

अपनी निजता के पक्ष में
खडा करते हुए खुद का
केवल स्त्री
केवल पुरुप रह जाते हैं अन्तत

आदिम नैतिकता को
तैनात करते हुए तमाम नैतिकताओं के खिलाफ
खारिज कर देते हैं
सारे के सारे सम्बन्धा को एक साथ

भापा को ठेंगा दिखा दते हैं कुछ लोग
बन्द कर देते हैं बोलिया की बाली
धता बताकर चल देते हैं
मर्यादाओं परम्पराआ और विश्वासो को

रिश्तों की हर चौहददी तोड डालते हैं कुछ लोग
अपनी निजता के पक्ष में

•

साबरमती एक्सप्रेस
1992

केवल तुम

•

तुम से अनुमति लेकर चला जाऊँगा एक दिन
कभी न खत्म होने वाली उस यात्रा पर
जीवन के पहले दिन हो गई थी जिसकी शुरुआत

अब तक धूप की तरह मिले थे कुछ लोग
कुछ लोग छाँव की तरह
ठण्डक बनकर मिले थे कुछ लोग
कुछ लाग गर्मी

घाव की तरह मिलने वाले भी कम नहीं थे
कम नहीं थे मरहम की तरह मिलने वाले
अपनी तरह मिली केवल तुम

अपनी तरह मिलने वाला से
अनुमति लेकर ही जाना होता है उस यात्रा पर
जीवन के पहले दिन होती है जिसकी शुरुआत

•

मसाढा

1992

वापस आने के लिए

•

तुम्हारी चुप्पी से डरकर अपने भीतर चला गया हूँ मैं
अपनी आवाजों के दायरा में घूमता हुआ दिन रात

भीतर की यह यात्रा
जिन्दगी से मौत की ओर ले जाने वाली भले न हो
जिन्दगी से जिन्दगी की ओर ले जाने वाली नही है

तुम्हारी चुप्पी पर
कोई सुबह उतर आती काश।
उतर आती पूरे चाँद की रात।
फूलों का मौसम उतर आता।
उतर आती ठण्डी ठण्डी फुहार।

खुद से बाहर निकलने की कोशिश करता मैं भी
तुम्हारी आवाजों के दायरे में वापस आने के लिए दुबारह

•

मसोढा
1992

लडकी अकेली है इस वक्त

•

लडकी अकेली है अपने सुख में
अपने दुख में अकेली है लडकी
अकेली है अपनी उत्तेजना और अपने आक्रोश में

अकेली है अपने सवाद में
अपनी चुप्पी में अकेली है लडकी
अकेली है अपनी हँसी में

अकेला है अपनी नीद में
अपने सपनों में अकेली है लडकी
अकेली है अपनी सुबहों में

अकेली है अपनी दोपहरों में
अपनी शामों में अकेली है लडकी
अकेली अकेली है अपनी किताबों में

लडकी अकेली है अपनी तन्हाइयों में
अपनी जम्हाइयों में अकेली है लडकी
अकेली है अपनी अँगडाइयों में
लडकी अकेली है इस वक्त

•

विदिशा
1992

खुद को छिपाने की कोशिश मे

•

खुद को छिपाने की कोशिश में
खूबसूरत यादों के ऊपर
रख लेते हैं लोग बेडौल बदरग यादें
इच्छा में लगा लेते हैं आग
आग लगा लेते है भावना में
आस्था में आग लगा लेते हैं लोग
समर्पित शब्दावली के ऊपर
रख लेते हैं गुर्राहट से भरी बोलियाँ
फूलो में छिपी गोलियाँ निकलने लगती हैं
मुस्कुराहटों से
स्पर्श का सुख लेती उँगलियाँ
आँखों में घुस जाने को तत्पर हो जाती हैं
खास तरह की गध की अभ्यस्त नाक के
नथुने फडकने लगते हैं अकस्मात
रस में डूबी अनुभूति का पारा चढ जाता है अचानक
खुद को छिपाने की कोशिश में
पूरा सच कोई नही बोल पाता है कभी

•

साबरमती एक्सप्रेस
1992

पहले प्यार की तरह

•

पहले प्यार की तरह होता है
पहला दृश्य
पहला शब्द
पहला उल्लास

पहले प्यार की तरह होती है
पहली मुस्कान
पहली पहचान
पहली खिड़की

पहले प्यार की तरह होता है
पहला पत्र
पहला मित्र
पहला चित्र

पहले प्यार की तरह होती है
पहली वस्तु
पहली इच्छा
पहली निगाह

•

विदिशा
1992

प्यार ओर युद्ध

•

नही किया जिसने प्यार
युद्ध नहीं कर सकता है वह

युद्ध में जाती है जान
जान देने की तमीज सिखाता है प्यार

युद्ध मे घायल होता है शरीर
घाव की गहराई बताता है प्यार

युद्ध में जन्म लेता है जीत का विचार
विचार को जिन्दा रखता है प्यार

युद्ध है उत्सर्ग का आखिरी त्यौहार
त्योहार का आयोजन करता है प्यार
प्यार नही कर सकता है जो
युद्ध नहीं कर सकता है वह

•

विदिशा
1992

गजल

•

बार बार कहती हुई—कहानी नहीं है यह
कहानी की तरह सुनाती जा रही है मुझे
बताती जा रही है—घटना है कोई
घटती हुई बार बार

कहानी से चलकर
चलकर घटना से
मेरी तरफ आ रही है वह
आवाज लगा रही है पीछे से
पीछे-पीछे चलती हुई

खलल है यादों में
ख्वाबों में खलल है मेरे
खलल ख्याल में है
मुझमें इच्छा की तरह प्रवेश कर रही है वह
बार बार कहती हुई—कहानी नहीं है यह
मुझे चिराग की तरह जला रही है
अपने अंधेरों में

•

विदिशा
1992

1 इस कविता की विषय–वस्तु को एक स्थल पर गजल के रूप में इस्तेमाल किया गया है — शलभ

अपनी मर्जी का एक क्षण

•

अधेरे में खुली खिडकिया के अधेरे
आपस में बात कर रहे हैं
बात कर रही हैं अधेरे में चलती पगडण्डियाँ
हवायें बात कर रही हैं आपस में चुपचाप
एक जवान लडकी घर से बाहर निकल रही है

अपने बिस्तर से उठ रही है लडकी
लिहाफ के बाहर निकल रहा है उसका शरीर
जमीन पर रख रही है कदम आहिस्ता
सन्नाटे में
नीद के अलग अलग स्वरों की
पडताल करते
उसके कानों को यकीन आ रहा है धीरे धीरे
धीरे धीरे कमरे से बाहर निकल रही है लडकी

किसी पत्ते पर पड गया है पाँव
नये कपडे की तरह फटा है सन्नाटा
चीख रही है पूरी ताकत से रात की चिडिया
सर स पाँव तक काँप गई है लडकी एक बार

पगडण्डियो ने पगडण्डियों को आगाह किया
खिडकियों ने खिडकियों को
आगाह किया हवाओं ने हवाआ को
घर से बाहर निकल रही है लडकी

खेत में खडी फसल निहार रही है उसे
निहार रही है रास्ते की घास
बगीचे के पेड निहार रहे हैं उसको
निहार रही है पूरी की पूरी कायनात
ईख का खेत होती जा रही हे लडकी
खुद की कीमत पर पाने के लिए अपनी मर्जी का
एक क्षण

विदिशा
1992

मारी गई तुम

•

उत्सुकता के हाथों मारी गई
मारी गई उत्कण्ठा के हाथों
जिज्ञासा के हाथों मारी गई तुम।

वर्जित फल के स्वाद ने
बना दिया तुमको इच्छा के वन का आखेट
अपनी ही वासना के हाथों
मार डाली गई तुम जीते जी।

निषिद्ध स्वाद के आकर्षण में
भटक रहा है तुम्हारा मन
जीवित मृत्यु के बाद भी
इच्छा के वन का आखेट समझ रही है
तुमको तुम्हारी वासना।

•

विदिशा
1992

पुनरावृत्ति

●

पेट पर रखा गया पत्थर
दिल पर पहाड
मन पर थोप दी गई बादलों की पर्त

भीगी आँखों से देखा गया सपना
धार धार हुआ
हुआ बूंद बूंद

न सीप का मुह खुला
न बाँस की गाँठ
हवा की झोली में गया सब कुछ
पत्थर बनने के लिए दुबारा
बनने के लिए पहाड और बादल

●

मसोढा
1992

हो गया सर्वनाश -

•

मदिरा के सामने झुक गया अमृत
चन्दन में व्याप गया विष
पानी से निकल पडी आग
अंधा हो गया विवेक
पंगु हो गई बुद्धि
गूंगा हो गया ज्ञान
हो गया सर्वनाश।

•

मसोढा
1992

दैनिक उत्सर्ग

•

हँसते हँसते होठो की हँसी छीन लेते हैं लोग
देखते देखते आँखो की रोशनी
बोलते बोलते छीन लेते हैं शब्द

बाकी रह जाता है एक लम्बा इम्तिहान
सब कुछ दाँव पर लग जाता है यक ब यक
शुरू हो जाता है हार का सिलसिला
यहाँ तक कि खुद को भी हार जाना पड़ता है एक दिन

कहाँ काम आता है ऐसे में कोई
बच रहता है केवल
रोज रोज का आत्मघात

•

मसोदा
1992

बचा रहा आदमी

•

विश्वास की हथेली पर रखा गया धोका
आत्मीयता के हवाले किया गया छल
फिर भी जिन्दा रहा आदमी
बार बार धाका और छल से गुजरकर

ढकेला गया पहाड से नीचे बार बार
बार बार आग में डाला गया जिन्दा
डाला गया बार बार समुद्र के तल में
निकला फिर भी सहा और साबित
बचा रहा—बचा रहा आदमी फिर भी

•

मसोढा
1992

औरों की तरह नहीं



अपने पिता की तरह कैसे कर सकता हूँ प्यार मैं ?
अपने भाई की तरह कैसे ?
कैसे कर सकता हूँ प्यार अपने पुत्र की तरह ?
मित्र की तरह कैसे ?
कैसे किसी अन्य व्यक्ति की तरह जो नहीं हूँ मैं ?

स्त्रियों से किया गया प्यार
वासना की ओर ले गया है मुझे हमेशा
वनस्पतियों से किया गया प्यार
उच्चाटन की ओर

पक्षियों से जब जब किया है प्यार मैंने
चुप्पी का शिकार हो गया हूँ अक्सर
फूलों के बीच लगभग अघा गई हैं मेरी आँखें
पशुओं से मिलकर सतर्क हो गया हूँ जरूरत से ज्यादा
नहीं कर सका हूँ प्यार मैं औरों की तरह किताबों से

किताबें
बेचैनी के दौरान
पीठ पर रखी आत्मीय हथेली की तरह लगी हैं मुझे
दूसरे दे आते हैं उन्हें परचून की दूकान पर बेधड़क
औरों की तरह नहीं कर सका हूँ प्यार मैं कभी



मसोढा
1992

तुम्हे छूकर

●

तुम्हें छूकर
खुद को छूने का अहसास हुआ

तुम्हें पाकर
खुद को पाने का

तुम्हें जीकर
खुद का जीने का अहसास हुआ

खुद को खोने के लिए
तुम्हें खोने की तैयारी कर रहा हू मैं

●

विदिशा
1992

सहज का समादर



जो सहज उपलब्ध है
उसका समादर करो
उससे ही चलाओ काम

मत करो अप्राप्य की इच्छा
अप्राप्य या दुष्प्राप्य की इच्छा
तुम्हारी व्यर्थता को सिद्ध कर देगी
बाँध देगी तुम्हें सीमा में

है सहज ही में विराट विकास
सहज है निस्सीम
सहज के निस्सीम का पहचानना है कठिन
जानना है कठिन उसकी साँस के सगीत को भी
क्योंकि स्वाभाविक सरल है वह

पालकर दुष्प्राप्य की आधी-अधूरी चाह
जटिल यों मत करो
जीवन की उजालों से भरी वह राह
जिस पर फूल बनकर मुस्कराते हैं तुम्हारे स्वप्न
जिनमें रग हैं उम्मीद के विश्वास के बल के

कल नही आया कभी
कल गया
आज का जो सत्य है स्वीकार कर उसको
स्वय में गहरे कही गहरे तनिक उतरो
जो सहज उपलब्ध है उसका समादर करो



मसोढा
1992

अपनी तस्वीर से निकल कर

•

अपनी तस्वीर से निकल कर
मरी स्मृति में दाखिल हो रही है वह

सर्दियों की गर्म धूप की तरह छूती हुई मुझे
छूती हुई गर्मियां की ठण्डी बयार की तरह
बरसात की फुहार की तरह छूती हुई
यादा के एक एक गलियारे में
दाखिल हो रही है वह

साफ साफ दिख रहे हैं
केवड की ताजा पखुडिया जैसे उस के दोना पाँ
दो चम्पई हथेलियाँ दिख रही है उसकी
अपनी हल्की गुलाबी रगत में खुलती हुई
मेरी पीठ और गर्दन ओर कधा को छूती

सुनाई पड रहे हैं धीमी धीमी आवाज में
अफसोस और उल्लास म डूबे उसके बाल
दुख सुख की बातें करते

उसकी निगाहां की थरथराहट और
मुस्कानों की घबराहट को
साफ साफ देख रहा हू मैं
मेरे आस पास की हवाओं में
आहिस्ता आहिस्ता घुल रही है उसकी साँसें
अपनी तस्वीर से निकलकर
मेरी स्मृति में दाखिल हो रही है वह

•

विदिशा
1992

प्रतिमा पूजा

•

चुप हो गया होगा
सुख से या दुख से
किसी कलाकार का अपना निजी ईश्वर

अपने उस ईश्वर की चुप्पी सहेजकर
गढ़ ली होगी उसने पत्थर की प्रतिमा
प्रतिमा पर रखा होगा उसने ही फूल पात
अर्पित किया होगा उसने ही धूप दीप

और इस तरह उसने
अपने उस ईश्वर को
बना दिया सबका

•

मसोढ़ा
1992

एक फूल का खिलना

•

एक फूल का खिलना
हजार हजार बच्चों के पैदा होने का
सकेत है
एक फूल का टूटना हजार हजार बच्चों की मौत का पैगाम

फूलों को सहेज सकता है जो
सपनों को भी सहेज सकता है वही
फूल और सपने जुड़वाँ भाई हैं

•

मसोढा
1992

चलते जा रहे हैं पाँव.

•

चौखट के पीछे रह गया घर
पीठ के पीछे गाँव
पाँव हैं कि चलते ही जा रहे हैं
घर घर गाँव गाँव होते हुए
कहाँ कहाँ तक चलते जा रहे हैं पाँव
धूप छाँव दोनों को पीछे छोड़ते
चलते जा रहे हैं पाँव

•

अयोध्या
1992

छोड देना पडता है सब कुछ

•

कुछ दिन कोई रोक लेता है
रोक लेता है कोई कुछ दिन और
और और लोग रोक लेते हैं कुछ दिन
एक दिन चलना पडता है फिर भी
चलते हुए छोड देना पडता है सब कुछ
यहाँ तक कि याद भी एक दिन छूट जाती है पीछे

•

अयोध्या
1992

चला जा रहा हूं

•

कल तक जो कुछ भी था
कहाँ है आज कुछ भी वैसा ?
बेला के सफेद फूल ने ले ली है
कल के सुर्ख गुलाब की जगह
खुशबू तक में फर्क पड गया है

तुम्हें तुम्हारे वर्तमान के हवाले करता
होता हुआ अपने वर्तमान के हवाले
तुम्हारी अंजुरी में रखकर फूल
चला जा रहा हूं मैं

•

अयोध्या
1992

विदा के समय

•

चेहरा वह नही था
हँसी भी नही थी वह
सुन्दर सुन्दर था फिर भी सब कुछ
दुख का ऐसा रूपान्तरण
देखा नही गया कही ।
देखा नहीं गया कभी ।।

•

अयोध्या
1992

इस वक्त



मरे कधे पर
कोई चेहरा नही है इस वक्त
नही हैं मेरी कनपटी को छूती हुई
काई गर्म साँस
हाथ नही है काई मरी पीठ पर इस वक्त
इस वक्त मरी परेशानी से परेशान नही है कोई

मर ब्ारे में
कोई कुछ भी नहीं साच रहा है इस वक्त
इस वक्त पूरी दुनिया में
कही नहीं हू मैं



अयोध्या
1992

गीत



अनकरा भी करा तुमने।
रिक्त मन को भरा तुमने।।

पल न जीवन एक मुक्त विरोध।
शोधकर प्रतिरोध प्रतिअवरोध।।

इस अधर को वरा तुमने।
रिक्त मन को भरा तुमने।।

क्षीण कल कल धार युक्त विषाद
नद कि जो अब हो चला हतनाद
दीप उसमें सरा तुमने।
रिक्त मन को भरा तुमने।।

श्लथ, चकित व्याकुल विकल मतिक्लान्त।
पवन में तरुपत्र मैं विभ्रान्त।।

निज अधर पर धरा तुमने।
रिक्त मन को भरा तुमने।
अनकरा भी करा



विदिशा
1992

गजल

●

मिरी जानिब[1] कदम खुद ही बढाता जाए है कोई
दबे पाँवों मिरी दुनिया में आता जाए है कोई

खलल [2] यादों में ख्वाबों में, खयालों में खलल सा है
'मिरे दिल में तमन्ना सा समाता जाए है कोई

बहुत नन्हे से खत में फूल की इक पखडी रखकर
"मैं जिन्दा हू मगर ऐसे बताता जाए है कोई

मुहब्बत और मजबूरी बयाँ करने की हसरत[3] में
नजर आहिस्ता-आहिस्ता उठाता जाए है कोई

'शलभ' मैं तो चिराग ए सहर[4] की मानिन्द[5] जिन्दा हू
मैं बुझता जा रहा हू और जलाता जाएहै कोई

●

विदिशा
1992

1 मेरी ओर 2 विघ्न 3 इच्छा किन्तु यहाँ अफसोस के अर्थ में प्रयुक्त 4 सुबह का चिराग 5 तरह

शरीर प्यार की सीढ़ी है

•

प्यार तक पहुचा जाता है
शरीर से होकर
शरीर प्यार की सीढ़ी है

कितने शरीरों से होकर
पहुचा जाता है इच्छित प्यार तक
कैसे बता पायेगा भला
कोई एक शरीर?

क्रम में छूटता हुआ नीचे कि पीछे
मात्र एक शरीर
आखिरी शरीर के बारे में
कैसे बता पाएगा
प्यार तक पहुचने से पहले ?

आखिरी शरीर से पूछेगा कौन ?
बतायेगा किसको आखिरी शरीर
प्यार तक पहुच जाने के बाद ?

•

विदिशा
1992

आत्म-रचना

•

अपने अपने पशुओं से मुखातिब है ससार
अपने अपने अधेरों में मुग्ध अपनी दुर्बलताओं पर
सुन्दर है पशुओं से सवादरत यह ससार फिर भी

सन्नाटे में आहटों का एक मौसम करवट ले रहा है
एक इन्तजार के दरवाजे पर खडा हो रहा है दूसरा इन्तजार
बेचैनी का एक अदभुत सगीत समाया हुआ है साँस साँस में इस वक्त

एक औरत निकली रही है अपनी धडकनों से बाहर
अपने खून की रफ्तार से बाहर निकल रहा है एक मर्द
आत्म रचना का एक सपना आकार ले रहा है यहा
एकाकार हो रहे हैं अधेरे में दोनों चुपचाप
अपने-अपने पशुओं से सवादरत

•

विदिशा
1992

इसी जनम में

•

कविता में ही कर सका
करना था जो कुछ मुझे
कह सका कविता में ही , कहना था जो जितना

ले गए कुछ लोग अपने हिस्से के शब्द
अर्थ ले गए लोग अपने हिस्से के
ले गए संकेत कुछ लोग

मन ले गए कुछ लोग आकर मन के पास
तन ले गए तन के पास आकर
ले गए जीवन पास आकर जीवन के

आस ले गए कुछ लोग आस के बदले
ले गए कुछ लोग विश्वास के बदले विश्वास
प्यार ले गए कुछ लोग प्यार के बदले

इसी जनम में बराबर हो गया सब का हिसाब
सबने हिसाब बराबर कर लिया अपना

•

विदिशा
1992

प्रकट होगी पृथ्वी

•

बहुत कम फूल बाहर हैं
बहुत कम सुगन्ध

बहुत कम बहुत कम वनस्पतियाँ
नदियाँ पहाड जगल झरने बहुत कम कम

बहुत कम स्त्रियाँ पुरुष और बच्चे
चिडियाँ मछलियाँ और जानवर बहुत कम
बहुत कम हसी मुस्कान प्यार और दुलार

रूप रस गध स्पर्श और स्वर का
बहुत थोडा हिस्सा बाहर है पृथ्वी के
अपने सम्पूर्ण सौन्दर्य के साथ
पृथ्वी प्रकट कहाँ हो पाई है अभी ?

अग-अग में रूप का नया सभार सहेजे
प्रकट होगी पृथ्वी एक न एक दिन जरूर
कविता की एक एक पक्ति में
एक एक रेखा में चित्र की
सगीत की एक एक लय में
ईश्वरी की तरह अपने सम्पूर्ण सौन्दर्य के साथ
प्रकट होगी पृथ्वी एक दिन

•

विदिशा
1992

तुम्हारे बारे मे

•

अब तुम्हारे बारे में सोचना ब द कर रहा हू
सामने देश खडा है
नींद में भी खडा रहता है देश सिरहाने
खडे रहते हैं करोड़ों देश वासी
उनकी बदहाली खडी रहती है सिरहाने रात भर

रात भर
रोटियों की परेड का भयानक दृश्य
रहता है आस पास,
चीथड़ों की नुमाइश का सिलसिला
खत्म नहीं होता रात भर
भूख और कुपोषण का बिरादरी भोज
रात भर चलता है इसी तरह
अब तुम्हारे बारे में सोचना बन्द कर रहा हू

तुम्हें रोटियों की परेड में
शामिल नही देखना चाहता हू मैं
नही देखना चाहता हू चीथडों की नुमाइश में
भूख और कुपोषण के बिरादरी भोज में नही
अब तुम्हारे बारे में सोचना बन्द कर रहा हू

तुमको
तुम्हारे निर्दोष विस्तार में देखा है मैंने
तुम्हारे शरीर की गन्ध
तुम्हारी हथेलियों के स्पर्श
तुम्हारी साँसों की भाषा से परिचित हू मैं

परिचित हू, तुम्हारी हसी की सुन्दरता से
उदासी की चुप्पी से परिचित हू मै
परिचित हू गुस्से की सात्विक बेचैनी से
अब तुम्हारे बारे में सोचना बन्द कर रहा हू

•

मसोढा
1992

आख़िरी बार

•

माला की आख़िरी गुरिया पर हैं उगली
आखरी कड़ी पर जजीर की
उगली रस्सी की आख़िरी गाँठ पर है इस वक्त

अपने आख़िरी अर्थ में खड़े हो रहे हैं शब्द
आख़िरी अभिव्यक्ति में शामिल हो रही है कविता
मच पर आख़िरी बार उपस्थित हो रहा है कवि

अपने आकर्षण में आख़िरी बार खुल रहा है ससार
जीवन आख़िरी बार सार्थक होने का प्रयत्न कर रहा है
प्यार और प्रार्थना एकाकार हो रहे हैं आख़िरी बार

•

मसोढा
1992

लिखना

•

रोटी पर लिखना
लिखना मेहनत पर
पर्यावरण पर लिखना
लिखना सेहत पर
अच्छा है

बच्चे पर लिखना
लिखना फूल पर
आकाश पर लिखना
लिखना धूल पर
उससे अच्छा है

जिन्दगी पर लिखना
लिखना ससार पर
खुद पर लिखना
लिखना प्यार पर
सबसे अच्छा है

•

मसोढा
1992

स्वाद म हस्तक्षेप



चार में
गुलाब की पखुडियों का स्वाद मिला
भैसों को आज

आज मनुष्य की लापरवाही से हुआ
पशुओं के स्वाद में हस्तक्षेप
सवेदना में हस्तक्षेप हुआ
पशुओं को आज

भैंसों का पूरा दिन बीता
गुलाब की पखुडियों की पहचान पर
बात करते
बात करते उनके स्वाद पर
चरागाह में
गुलाबों की खोज करती रहीं वे
बिना चरे
बिना चरे मगजमारी करती रही
पखुडियो की रगत पर
खुशबू को लेकर माथा मारती रहीं दिन भर
मनुष्य की लापरवाही से
खराब हुआ भैसों का एक पूरा दिन



मसोढा
1992

व्यस्तता



खाली है पुस्तकालय में एक जगह
अच्छे पाठक के लिए
गंगा घाट पर एक जगह खाली है
स्नान से मोक्ष के इच्छुक व्यक्ति के लिए

लग्नमण्डप में खाली है एक जगह
वर वधू को आशीर्वाद देकर
पुण्य अर्जित करने वालों के लिए

एक जगह खाली है श्मशान में
स्वजन के मृत्युशोक में डूबे जन के लिए

इन जगहों पर होने के वक्त
जन्म लेता रहा है कोई न कोई बच्चा
कहीं न कहीं
मैं नये मनुष्य के स्वागत में
व्यस्त रहा हू हमेशा ठीक इसी वक्त



मसोढा
1992

इस साल



इस साल बहुत ज्यादा लिखे गये बेवकूफी से भरे गीत
बेवकूफों ने उन्हें झूम झूमकर गाया इस साल
इस साल सुना उन्हें बेवकूफों ने जी भर

इस साल किशोर ढाक के पत्तों में उलझा रहा मैं
उलझा रहा जवान पीपल की परछाइयों में इस साल
इस साल बूढ़े बरगद की जटाओं में उलझा रहा मैं

इस साल पिछले सालों का दर्द नहीं था मेरे साथ
नहीं था कोई कथित हमदर्द मेरे साथ इस साल
इस साल कोई रंग नहीं था काला सफेद या जर्द मेरे साथ
इस साल बहुत ज्यादा लिखे गये बेवकूफी से भरे गीत



मसौदा
1992

घास नहीं है यह

•

घास नहीं खाता शेर
खा रहा है तो घास नहीं है यह

यह उसके मजबूत जबड़ों की जरूरत है
जरूरत है भूख की
उसकी जीभ में बसे पानी की जरूरत है वह

शेर की भूख में
हस्तक्षेप नहीं कर सकती घास
खा रहा है शेर तो घास नहीं है यह

•

विदिशा
1992

विनीता पालीवाल

•

कितनी ताकतवर हो गई हो तुम विनीता पालीवाल
कि सारा गाँव खड़ा है तुम्हारे खिलाफ लेकर हरबा हथियार
और कुछ भी नहीं बिगाड़ पा रहा है तुम्हारा

रात केअंधेरे में अपनी जवान बेटियों के
खाली बिस्तर देखकर भी नहीं चौंकते हैं जो
दिन के उजाले में तुम्हारे कदमों की आहट से
खड़े होने लगते है उनके कान

फुसफुसाहट के अन्दाज में की गई हर लामबन्दी को
झपट की तरह तोड़कर बाहर निकल आती हो तुम
घरघराती हुई साँसों के बीच दहाड़ की तरह तुम्हारा यह होना
मुझे बहुत अच्छा लगता है विनीता पालीवाल !
बहुत अच्छा लगता है अंधेरे में सरसराहट की तरह तुम्हारा
उभरना
सन्नाटे को तोड़ने की तुम्हारी यह शैली बेजोड़ है।

जंगल की जागती हुई आँख की तरह
अपनी चौहद्दियों की निगरानी करतीं तुम
जिस मुकाम पर खड़ी होती हो
उसकी उचाई बढ़ जाती है अपने आप
लोग हैं कि नीचे और नीचे ही जाना चाहते हैं
लगातार
अपने अंधेरों में अपने डरावने सपनों के साथ
तुम्हें भी ले जाना चाहते हैं वही
जहाँ जाने से रोशनी ने इन्कार कर दिया था
शताब्दियों पहले

दूसरों का चूल्हा जलाने के लिए
जला लिया है अक्सर तुमने अपना पल्लू
दूसरों की कोठरी साफ करने में काले हुए हैं तुम्हारे हाथ

दूसरो के सुख में सुखी, अपने दुख का भागीदार
नही होने दिया तुमने किसी को कभी

कभी नही भाँपने दी अपने माथे की उदासी
अपनी सूनी कलाई का दर्द
अपनी खामोश आखों की बेचैनी

अपने छटपटाते मन की टीस पढने नहीं दी किसी को तुमने
सुनने नही दिया शहनाई के सुर में शोक धुन का उतरना
एक फूल वाली टहनी कि तुम विनीता पालीवाल
पतझर की तमाम चुनौतियों के जवाब में खडी हो अकेली
पस्तहिम्मती के पठार पर खडी होती है जैसे उमीद

•

मसोढा
1992

अनैतिक कहा गया

•

अनैतिक कहा गया मुझको
अनैतिकों के बीच
सबसे ज्यादह नैतिक रहा मैं ही
सबसे ज्यादह खतरनाक मोर्चों पर
लड़ता हुआ उम्रभर
सबके हिस्से की लड़ाई
अनैतिक कहा गया मुझे ही फिर भी

शब्दों में रहा ईमानदार
ईमानदार जीवन में
सपनों तक में ईमानदार रहा हू मैं
बर्दाश्त करता हुआ नींद में खलल
दखलअन्दाजी जिन्दगी में
फिर भी कहा गया अनैतिक मुझे ही

•

विदिशा
1992

शब्दो का होना



नफरत में डूबी अपनी निगाहों को वापस लो
वापस लो गुस्से में उठे हुए हाथ

नगर कविताओं से बचे हैं हमेशा
कवियों से बचे हैं देश
सभ्यताएँ शब्दों से बची हैं

नगर में कविताओं का होना जरूरी है
देश में कवियों का
शब्दों का होना दुनिया में बेहद जरूरी है
सभ्यताओं के लिए

नफरत में डुबी अपनी निगाहों को वापस लो
वापस लो गुस्से में उठे हुए हाथ
यहां
कविताओं में दुबक कर सो रहे हैं नगर
देश कवियों के भीतर साँस ले रहा है
सभ्यताएं शब्दों के भीतर आराम फरमा रही हैं
वापस लो गुस्से में उठे हुए हाथ
नफरत में डूबी निगाहों को वापस लो।



मसोढा
1992

समुद्र जब सास लेता है

•

समुद्र जब सास लेता है
पृथ्वी की नीद उचट जाती है
पृथ्वी की नीद में समाता समुद्र
अपने ही किनारों को ताडता हुआ
अपनी ओर लौटता है जब
मछलियों के गालो पर आसू होते हैं
शोक धुनें होती हैं जलपक्षियो की आवाजों में
नीद पृथ्वी के आस पास मडराती रहती है
मडराती हुई इस नीद को
अपनी उसासों में समेटना चाहती है पृथ्वी
लपेटती हुई खुद को अपने आप में
भाप में तब्दील होती रहती है तमाम रात
रात आवारा सपनों के पीछे भागती रहती है
सूरज की गश्त से पहले
अपने ही खून में नहाती पृथ्वी का दर्द
हवाओ में फैल चुका होता है अक्सर
सुबह की चिडिया बोलना भूल चुकी होती है
समुद्र की सास और पृथ्वी की उसास के बीच
एक एक चीज थरथराती रहती है चुपचाप
जिन्दगी याद की तरह आती है एसे में
हर किसी के करीब
समुद्र जब साँस लेता है पृथ्वी की नींद उचट जाती है

•

विदिशा
1992

कुछ भी हो पाता इनमें से काश

•

मुसलमान का घर किधर है ?
किधर है हिन्दू का घर ?
ईसाई का घर किधर है ?
किधर है सिख जैन पारसी का ?
मेरा घर नहीं ढूंढा किसी ने
नहीं पूछा मेरा पता
जानना नहीं चाहा मेरे बारे में कुछ भी
मैं इनमें से कुछ भी नहीं था शायद

कैसे हो जाते हैं लोग मुसलमान ?
हिन्दू कैसे ?
कैसे ईसाई सिख जैन पारसी ?
इनमें से कुछ भी नहीं हो सका मैं
उल्लू, अभागा मुहँजला करमकट्टू।
कुछ भी तो होता
कुछ भी हो पाता इनमें से काश !

•

मसोढा
1992

घातक लोग

•

घातक इरादों वाले
घातक लोग हैं ये
घातक हथियारों से लैस

घात में बैठे इच्छाओं की
आकांक्षाओं की घात में बैठे
घात मे बैठे कामनाओं की
घातक लोग हैं ये

हरियालियों खुशबुओं रंगों के कातिल
कातिल बारिशों धूपों और चांदनियों के
चट्टानों आवाजों और थिरकनों के कातिल
घातक लोग हैं ये

भाषा हथियारों में ढली इनके लिए
हथियारों में ढला ज्ञान विज्ञान
तकनीकी प्रोद्योगिकी यांत्रिकी ढली हथियारों में
ढल गई कविता कला और गायिकी
घातक लोग हैं ये
घातक इरादों वाले
घातक हथियारों से लैस

•

विदिशा
1992

अलविदा !

●

भागो ! भागकर जाओगे कहाँ ?
सामने अधेरी सुरग है
दाहिने कुआँ
खाई है बाँयी ओर
पीछे इतिहास की भयानक स्मृतियाँ
आसमान में जगह नही है तुम्हारे लिए
बर्दाश्त की हद तक ले चुके हो जमीन का इम्तिहान
जगह नहीं है तुम्हारे लिए कोई कही

तुम्हारे नियत्रण के बाहर है तुम्हारा ज्ञान
विज्ञान बाहर है तुम्हारे नियत्रण के
ध्यान तक तुम्हारे नियत्रण में नही है
पथराओ खडे खडे
खडे खडे सहा रोबो की मार
कम्प्यूटर के डाटे चबाओ पडे पडे

अलविदा !
एक कविता मेरे इन्तजार में है
इन्तजार में है एक लडकी कविता की जगह लेती हुई
एक औरत कविता से बाहर जाती
सब की सब मेरे इन्तजार में

राकेटों मिसाइला बमा और रसायनों से दूर
अपनी दुनिया में वापस जा रहा हू मैं
एक बच्चा मेरे इन्तजार में है
इन्तजार में है एक फूल
एक पत्ती मेरे इन्तजार में है

●

विदिशा
1992

बकरी ने खैर मनाई

•

सोता रहा शेर
बाघ सोता रहा
सोता रहा चीता
बकरी ने खैर मनाई

भेडिये ने गाया दुख का गीत
खरगोश ने अचरज से देखा
उदासी की आवाज में बोला तेंदुआ
हाथी चिण्घाडा एक खास अन्दाज में
सियार सकते में आ गया
बारहसिंघा भौंचक
शोक में डूब गई लोमडी
नील गाय ने दौड लगाई कुत्ते के पीछे
बकरी ने खैर मनाई

•

विदिशा
1992

जगल

•

जगल
जितना बडा है
उतना बडा है हरियाली का सपना

जगल
जितना बडा है
उतना बडा है चिडिया का गीत

जगल
जितना बडा है
उतना बडा है खुशबू का ससार

जगल
जितना बडा है
उतना बडा है जानवर का सुख

जगल
जितना बडा है
उतना बडा है आदमी का प्यार

•

विदिशा
1992

अपनी अपनी आग



सूरज अपनी आग में जल रहा है
अपनी आग में जल रहा है चाँद
तारा अपनी आग में

जंगल अपनी आग में जल रहा है
अपनी आग में जल रहा है पहाड़
नदी अपनी आग में

समुद्र अपनी आग में जल रहा है
अपनी आग में जल रहा है आकाश
धरती अपनी आग में

पशु अपनी आग में जल रहा है
अपनी आग में जल रहा है पक्षी
आदमी अपनी आग में

अपनी अपनी आग है सबकी
कवि सबकी आग में जल रहा है



विदिशा
1992

आखिरी तस्वीर

•

मरते हुए जानवर की आँख में
आखिरी तस्वीर है जंगल की
मरती हुई चिड़िया की आँख में
तिनके की है आखिरी तस्वीर
मरती हुई लड़की की आँख में
आखिरी तस्वीर है प्यार की
मरती हुई औरत की आँख में
घर की है आखिरी तस्वीर
मरते हुए आदमी की आँख में
आखिरी तस्वीर पत्थर की है
कवि की आँख में आखिरी तस्वीर
दुनिया की

•

विदिशा
1992

कैसे हैं आप?

●

कहिए प्राचार्य बंधु!
कैसे हैं आप?
मैं जीवित शाप
वरण किया तुमने
धन्य हुआ मैं
अनन्य हुआ,
यहाँ तक कि प्रणम्य भी

●

विदिशा
1992

(यह निजी संबोधन विदिशा स्थित सम्राट अशोक इंजीनियरिंग महाविद्यालय के प्राचार्य मेरे मित्र श्री हरिवंश नारायण सिलाकारी के लिए है शलभ)

फिर-फिर जन्म लेने के लिए

•

शब्द हैं
शब्द की पक्तिया हैं
पखुडियाँ हैं सूखे गुलाब की दो चार
भटकी हुई याद की तरह
अव्यक्त अवसाद की तरह
बिखरी बिखरी सामने

उन्हीं को सहेजता रहा रातभर
दिन भर

दिन दिन रात रात
गुजरते रहे वर्ष पर वर्ष
शताब्दी पर शताब्दी
जन्म पर जन्म
सहेजता रहा गुलाब की पखुडियाँ
फिर फिर जन्म लेने के लिये

•

विदिशा
1992

सोन्दर्यवान है सब कुछ

•

घृणित कुछ रहा नही मेरे लिए
न रहा कुत्सित कुरूप गर्हित
अपने-अपने स्व में
सौन्दर्यवान रहा सब कुछ
पापियों के गले में
कण्ठहार की तरह शोभित रहा पाप
शाप अभिशप्ता के शीश पर चढ़ा रहा सादर
अंधकार बाहर भीतर फैला अपने विस्तार में
नग्नता, दरिद्रता, विरूपता को देता रहा शरण
अपने-अपने स्व में सौन्दर्यवान रहा सब कुछ

•

विदिशा
1992

सम्पादक की खेर नहीं



दुर्घटना का कोई समाचार नही है अखबार म आज
नही है बलात्कार का कोई समाचार
हत्या राहजनी डकैती का कोई समाचार नही है
आज सम्पादक की खैर नही

नेताओं के बयान तक सही छाप दिये गए हैं आज
सही सही छाप दी गई हैं भूख और गरीबी की खबरें
पूँजीपतियों तक को ईमानदार बता दिया गया है आज
आज सम्पादक की खैर नहीं

घरेलू लडकियों की तस्वीरें छप गई हैं ज्यों की त्यो
ज्यों की त्यो छप गई हैं कामकाजी औरतो की तस्वीरें
बुजुर्ग महिलाओ की तस्वीरो से अनुभव झाँक रहे हैं सरे आम
आज सम्पादक की खैर नही

बुद्धिजीवियो का प्रतिवाद ठीक ठीक छपा है आज
आज कामगारों काबयान छपा है ठीक ठीक
ठीक ठीक छपा है आज बेरोजगारो का प्रतिवेदन
आज सम्पादक की खैर नही



विदिशा
1992

सपने पीछे छूट रहे है

•

सपने पीछे छूट रहे हैं आगे आगे चल रही हैं चिन्ताएँ
मेमने कसाइयों के हवाले करते जा रहे हैं गर्दने
बाज के घोंसलों में दाखिल हो रहे हैं कबूतर
तितलियाँ मकडो की गिरफ्त में आ रही हैं अपने आप

सपने पीछे छूट रहे हैं, आगे आगे चल रही हैं चिन्ताएँ
पत्तियाँ पतझर की साँसों से खेल रही हैं
फूल आग की तलाश में निकल पडे हैं अचानक
डालियाँ आँधियो के इन्तजार में खडी हैं सर झुकाए

सपने पीछे छूट रहे हैं आगे आगे चल रही हैं चिन्ताएँ
बच्चे खेल रहे हैं बारूद का खेल
औरतें मुस्कानों में सन्नाटा समेट रही हैं
दुनियाँ उदास और उदास होती जा रही है

•

विदिशा
1992

बच गया मैं

•

किसी ने
दावानल कह कर
खुद से अलग कर दिया

अचल मानकर
किसी ने
कर ली किनाराकशी

किसी ने
निरन्तर चल जानकर
बचा लिया अपना दामन

बच गया मैं
इस तरह इस तरह आखिर
ईश्वरी के लिए
लिखता हुआ कविताए

•

विदिशा
1992

॥ઉંડાઈ આલમ॥

બાઇબિલ નહીં પઢી મૈંને
નહીં, કુરાન નહીં
ગીતા નહીં પઢી મૈંને

પઢા તુમકો
ખુદ કો પઢા મૈંને
ચઢા ઐસે પહાડ પર
જિસકો શાયદ હી ચઢા હો કોઈ
ઉંચાઈ ઐસી
કિ અરા-ઉરા સા ઉડે પતાકે
નીચે જમીન કા કૈ-કૈ તક પતા નહીં

યહાઁ હર આગ જલ રહી હૈ
નિકલ રહે હૈં લપટોં સે
હમ ભી હર બાર-બાર
અપની પુકારોં કે પ્રત્યુત્તર મેં
બાઇબિલ નહીં પઢી મૈંને

દીલમ શ્રીરામ ત્રિવે

1993